विषय सूची

1. पर्यावरण की अवधारणा एवं चेतना — 1-13

   डा0 गोविन्द कुमार पासवान

2. भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय नैतिकता के आयाम का अवलोकन — 14-21

   डा0 राकेश रौशन

3. पर्यावरण संरक्षण में पंचायतों की भूमिका — 22-28

   डा0 देवराज सुमन

4. पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता के लिए शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका — 29-39

   डॉ0 रूक्मिणी चौधरी

5. बिहार का पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन का अवलोकन — 40–45

   डा0 राजेश कुमार सुमन

6. लोक न्यास का सिद्धान्त एवं पर्यावरण: एक मूल्यांकन — 46-58

   डा. विनोद कुमार

7. बौद्ध धर्म में बोधि वृक्ष की महत्ता : एक अध्ययन — 59-66

   सुरेश कुमार

8. भारत में पर्यावरण संरक्षण एवं विधि : एक विश्लेषणात्मक अवलोकन — 67-73

   प्रयाग कुमार पासवान

9. पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण आन्दोलनों की भूमिका — 74-84

   सुधा सोनकर

10. जलवायु परिवर्तन में भूमंडलीय ऊष्मीकरण का प्रभाव 85-91

सोनिका गुप्ता

11. पर्यावरणीय चेतना : प्राचीन भारतीय राजाओं के द्वारा 92-99

मुकेश कुमार

12. मिथक, प्रतीक और पर्यावरण 100-108

अनुराग कुमार पाण्डेय

अखिलेश कुमार उपाध्याय

13. पर्यावरण संरक्षण एवं वन विस्तार में महिलाओं की भूमिका 109-115

अंशुमान सुमन

14. सांस्कृतिक पर्यावरण का महत्व एवं प्रसांगिकता 116-125

बीना सोनकर

15. भारत में जलवायु परिवर्तन एवं चेतना : एक अध्ययन 126-134

विकास कुमार चौधरी

16. ज्योतिष शास्त्र का पर्यावरण संरक्षण में भूमिका 135-140

बिनोद रंजन

17. पर्यावरणीय राजनीति का दशा और दिशा 141-154

संदीप कुमार गौरव,

18. सतत् विकास एवं पर्यावरण : एक अध्ययन 155-162

केशव कुमार राय

लोक न्यास का सिद्धान्त एवं पर्यावरण: एक मूल्यांकन

डा. विनोद कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर छ.ग.

यह ध्रूव सत्य है कि मनुष्य प्रकृति पुत्र है। मनुष्य जब से अस्तिव में आता है तब से लेकर मृत्यु तक प्रकृति पर ही निर्भर रहता है पर्यावरण मनुष्य एवं प्रकृति के बीच घानिष्ठ एवं संवेदनशील संबध का परिचायक है। पर्यावरण मानव जीवन को भोजन, जल एवं अन्य मूलभूत सुविधाये प्रदान करता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिल कर बना है परि + आवरण जिसका अर्थ है हमारे चारो तरफ का वातावरण ही पर्यावरण है अर्थात् हम जिससे चारो तरफ से घिरे हैं वह पर्यावरण है। ब्लैक लॉ शब्दकोष ने युनाइटेड स्टेट्स बनाम अमडियो के मामले में दी गयी परिभाषा को स्वीकार करते हुए पर्यावरण की अति व्यापक परिभाषा को स्वीकार किया है। पर्यावरण संरक्षण अधिनीयम 1986 की धारा 2(क) के अनुसार पर्यावरण के अंतर्गत जल, हवा, भूमि तथा अन्य जीवित प्राणी, पौधे सुक्ष्म जीवणु और उनके बीच विद्यमान अर्न्तसम्बन्ध सम्मिलित है।

पृथ्वी पर व्याप्त पर्यावरण प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान है। पर्यावरण वह पक्ष है जिसने पृथ्वी को जीवित जगत का गौरव प्रदान किया है। इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी की तरह अगणित ग्रह हैं परन्तु प्रामाणिक जानकारी के अनुसार केवल पृथ्वी पर ही जीवन का विकास पाया गया है। पर्यावरण का तात्पर्य पृथ्वी के जैव जगत को आवृत करने वाले भौतिक परिवेश से है। पर्यावरण जैव जगत की प्राणवायु है। इस लिए हर्सकोविट्स ने लिखा है कि "पर्यावरण सम्पूर्ण वाह्य परिस्थितियों और उसका जीवधारियों पर पड़ने वाला प्रभाव है जो जैव जगत के विकास का नियामक है।" यह स्पष्ट है कि पृथ्वी एक जीवित कोशिका है और इसके चारों तरफ फैला पर्यावरण रक्षा कवच है।[1]

---

[1] अनिरुद्ध प्रसाद, पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रुपरेखा (इलाहाबाद: इलाहाबाद सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स 2015 अष्ठम संस्करण) पृ. 1